वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

बुधवार,पौष कृष्ण पक्ष,अमावस्या, कलियुग वर्ष ५१२२ (१३ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

१४ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-14012021

गुरु वन्दना

गंगा काशी कांची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा।
यमुना रेवा पुष्करतीर्थ न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥

अर्थ : गङ्गा, यमुना, रेवा आदि पवित्र नदियां, काशी, काञ्ची, पुरी, हरिद्वार, द्वारिका, उज्जयिनी, मथुरा, अयोध्या आदि पवित्र पुरियां व पुष्करादि तीर्थ भी श्रीगुरुसे बढकर नहीं हैं, श्रीगुरुसे बढकर नहीं हैं।

शास्त्रवचन

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था,
वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन
लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः ॥

अर्थ : स्कन्दपुराणके अनुसार नाम महिमा : जिसके मानसमें भगवन नामका सम्यकरूपसे संचार हो गया है, वह अपार संवित्-सुखके सागरमें ब्रह्मलीन हो जाता है। ऐसे भक्तोंके जन्म मात्रसे कुल पवित्र एवं जननी कृतार्थ और पृथ्वी पुण्यवती हो जाती है।

****

तदश्मसारं हृदयं बतेदं,
यद् गृह्यमाणैर्हरिनामधेयैः।
न विक्रियेताथ यदा विकारो,
नेत्रे जलं गात्ररुहेषु हर्षः ॥

अर्थ : श्रीमद्भागवतके अनुसार नाम महिमा : हे सूतजी ! वह हृदय मनुष्यका नहीं, लोहेका है, जो मङ्गलमय भगवानके नामोंका श्रवण, कीर्तन करनेपर भी, पिघलकर परमात्माकी ओर नहीं बहता। जब हृदय पिघल जाता है, तब नेत्रोंसे आंसू बहने लगते हैं एवं शरीरका रोम-रोम नाच उठता है।

धर्मधारा

१. वर्तमान कालमें एक अनुचित प्रचलन आरम्भ हुआ है और वह है विवाहके उपरान्त नवविवाहित जोडेका कहीं भ्रमण हेतु जाना जिसे आजकल 'हनीमून' कहते हैं। पूर्वकालमें विवाहित जोडा अपने कुलदेवी या इष्टदेवताके देवालय जाता करते थे

और यदि वह उनके मूल स्थानसे दूर हो तो वे किसी सगे-सम्बन्धीके घर रुकते थे, वहीं आज प्रेतबाधित विश्रामालयमें जाकर अपने विवाहित जीवनका शुभारम्भ करते हैं। आपको बताया था न मैकालेकी आसुरी शिक्षण पद्धति शिक्षितोंके विवेकको नष्ट कर दिया है!

यह सत्य है कि यदि विवाह माता-पिताद्वारा निर्धारित युवक या युवतीसे हुआ हो तो एक-दूसरेको समझने हेतु कुछ समय एक साथ बिताना चाहिए; किन्तु आजकल नव-विवाहित दम्पति, इसी क्रममें विवाह उपरान्त किसी सुन्दर नैसर्गिक स्थानपर जाकर रहते हैं। यहांतक सब ठीक है; किन्तु वे इसी क्रममें जब विवाह उपरान्त त्वरित कुछ दिवस किसी विश्रामालयमें रहते हैं तो वहांके रज-तम प्रधान वास्तुसे उन्हें सूक्ष्म स्तरपर हानि पहुंचती है। कुछ विवाह बन्धन तो आजकल 'हनीमून'के पश्चात ही टूट जाते हैं या उनमें मनमुटाव आरम्भ हो जाता है। इससे ही इस कृत्यसे नव विवाहित दम्पतिको कितनी हानि पहुंचता है ?, यह ज्ञात होता है; किन्तु इससे अधिक वे अपनी अगली पीढीको कैसे हानि पहुंचाते हैं ?, यह बताती हूं।

वैसे भी आज सौ प्रतिशत लोगोंको पितृदोष है, इस कारण आज ५० प्रतिशत बच्चोंको गर्भसे ही अतृप्त पितरोंके कारण कष्ट होता है, ऐसी स्थितिमें यदि किसी विश्रामालयमें स्त्री गर्भवती हो जाती है तो उसके गर्भको अनिष्ट शक्तियोंके कष्ट बढनेकी सौ प्रतिशत आशंका होती है; क्योंकि आज देश हो या विदेश सभी विश्रामालय (होटल) भुतहा हैं।

गर्भाधान संस्कारके विषयमें आज जानकारी न होनेके कारण आजके दम्पतीको इस सम्बन्धमें सात्त्विक वास्तु, शुभ मुहूर्तका कितना अधिक महत्त्व है ?, यह ज्ञात नहीं है।

विवाहका एक मूल उद्देश्य होता है और वह है उत्तम सन्ततिकी प्राप्ति । किन्तु उत्तम सन्ततिकी प्राप्ति हेतु क्या करना चाहिए यह भी धर्म शिक्षणके अभावमें आज हिन्दुओंको ज्ञात नहीं है, ऊपरसे ये विवाहोपरान्त जब गर्भ ठहरनेकी सबसे अधिक सम्भवनाएं होती हैं तो भ्रमणके या एकाकी समय बितानेके उद्देश्यसे ये अशुद्ध एवं अपवित्र स्थानपर रात्रि निवास करते हैं, अशुद्ध एवं अपवित्र भोजन करते हैं और अपनी आनेवाली पीढीको उपहार स्वरूप अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट दे देते हैं । इसलिए सभी नवदम्पतिसे मेरा निवेदन है कि वे ऐसा न करें ! आजके विश्रामालय कैसे होते हैं, इसका अनुभव मैंने धर्मप्रसारके मध्य लिया है । इस विषयमें मैंने एक लेख लिखा था उसे यहां पुनः प्रकाशित कर रही हूं जिससे आपको इस विषयमें थोडी और सुस्पष्टता आ जाए ।

वर्तमान समयके 'होटल' कहलानेवाले विश्राम गृह अर्थात भूतोंका प्रमुख स्थल !

धर्मप्रसारके मध्य अनेक बार हमें विश्राम गृहोंमें (होटलोंमें) भी रुकना पडता है । सूक्ष्म इन्द्रियां कार्यरत होनेके कारण ऐसा कह सकती हूं कि इन स्थानोंपर रुकना अर्थात कुछ नूतन घटित होने हेतु सिद्ध रहना होता है, आजका यह लेख इसी प्रकारकी कुछ अनुभूतियोंका संग्रह है । ईश्वरीय कृपासे मैं सदैवसे ही निडर रही हूं एवं अधिकांश समय श्रीगुरुने मुझसे अकेले ही धर्मप्रसार हेतु यात्राएं कर सेवा करवाई हैं, ऐसेमें जब भी किसी विश्राम गृहमें रात्रि बिताना हो तो प्रथम रात्रि मेरे साथ कुछ न कुछ निराला घटित होना निश्चित ही होता है, चाहे मैं कितनी भी सतर्क होकर सारे आध्यात्मिक उपाय क्यों न कर लूं; मात्र गुरुकृपाके कारण वे मुझे कभी विशेष कष्ट नहीं दे पाए या भयभीत नहीं कर पाए ।

प्रस्तुत है ऐसी ही कुछ अनुभूतियां -

* ख्रिस्ताब्द २०११ में धर्मयात्राके मध्य देहलीमें एक साधकने कोस्ट गार्डके एक विश्राम गृहमें रुकवानेकी मेरी व्यवस्था करवाई थी। प्रथम दिवस रेलयानसे (ट्रेनसे) एक दिवस यात्रा करके आनेके पश्चात, सवेरेसे ही कोई न कोई जिज्ञासु या साधक मिलने आते रहे; अतः मैं रात्रिमें साढे दस बजेतक अत्यधिक थक चुकी थी एवं मैं नामजप, प्रार्थना कर, वास्तुशुद्धिकी उदबत्ती जलाकर सो गई। मैं जहां रुकी थी, वह एक 'सुईट' थी, जिसमें एक शयन-कक्ष और एक बैठक-कक्ष था। मैं अपने कक्षके द्वारकी सिटकिनी बन्दकर सोई थी, यह मुझे अच्छेसे स्मरण है। अकस्मात साढे बारह बजे रातमें मेरे कक्षके द्वारके बार-बार खुलने एवं बन्द होनेकी ध्वनिने मेरी नींदको भंग कर दिया। मैंने उठकर द्वारकी सिटकिनी पुनः बन्द की और समय देखा तो पाया कि अर्ध रात्रिका समय था। कुछ क्षणोंके लिए मुझे नींद नहीं आई और तब मैं सोचने लगी कि मैंने सोनेसे पूर्व इसकी सिटकिनी बन्द की थी तो यह खुल कैसे गई ?, जैसे ही मैंने इसका सूक्ष्मसे निरीक्षण किया तो ज्ञात हुआ कि उस विश्राम गृहकी सभी अनिष्ट शक्तियोंने मेरा ध्यान आकृष्ट करने हेतु यह धृष्टताकी थी, मुझे उन सबकी उपस्थितिकी भी स्पष्ट रूपसे प्रतीति हुई। मैं अत्यधिक थकी हुई थी; अतः पुनः कवच लेकर एवं उन्हें सावधान कर कि मुझे पुनः न जगाएं, अन्यथा मैं भगवानजीसे उनके विषयमें परिवाद (शिकायत) कर दूंगी, यह बताकर सो गई। मैं वहां छह दिवस थी और वह स्थान नोएडामें मुख्य मार्गपर था, तब भी जो भी मुझसे मिलने आनेवाले थे, सभीको वहांकी अनिष्ट शक्तियां दिशाभ्रमित कर, उनका समय व्यर्थ अवश्य करती थीं। यद्यपि अगली रातसे ऐसा कोई प्रसंग नहीं हुआ; किन्तु अनिष्ट

शक्तियोंकी संख्या इतनी अधिक थी कि मैं रात्रिमें दण्डदीप (ट्यूबलाइट) जलाकर ही सोती थी, जिससे वे अधिक प्रमाणमें उत्पात न कर सकें।

* ख्रिस्ताब्द २००५ में मैं कोलकाताके दो साधकोंके साथ भुवनेश्वरमें लगे पुस्तक मेलेमें सनातन संस्थाकी ग्रन्थ प्रदर्शनीमें सेवा करने हेतु गई थी। वहां भी जिस अतिथिगृहमें (गेस्ट हाउसमें) हमें जो कक्ष दिया गया था, उसे देखते ही समझ आ रहा था कि वह भूतहा है; अतः जब हमने व्यवस्थापकको उसे परिवर्तित करने हेतु कहा तो वे कहने लगे शेष सभी कक्ष भरे हुए हैं, आपको यदि यहां रहना है तो इसी कक्षमें रहना होगा, हमें वहां दस दिवस रहना था और हमें किसी हितचिन्तकने निःशुल्क दिलवाया था; इसलिए वहां रुकनेके अतिरिक्त हमारे पास और कोई पर्याय नहीं था। पुस्तक मेला एक विशाल खेलके 'मैदान'में आयोजित हुआ करता था; अतः भीड होनेपर अत्यधिक धूल उडा करती थी। तीसरे दिवस रविवार होनेके कारण हम सभी धूलसे तो भर ही गए थे, अत्यधिक थक भी गए थे; अतः मैंने और एक सह-साधिकाने रात्रिमें स्नान करनेका निर्णय लिया जिससे उष्णता (गर्मी) भरी रातमें अतिथिगृहके पंखेकी खड-खड ध्वनि हमारी निद्राको बाधित न करे और स्नानसे स्वच्छ होनेपर हमें थोडी स्फूर्ति भी मिले। मैं, जब सामूहिक स्नानगृहमें स्नान करने गई और स्नान हेतु वस्त्र उतार ही रही थी कि मुझे भान हुआ कि अनेक अनिष्ट शक्तियां लाल-लाल नेत्रोंसे मुझे घूर रही हैं, कुछ क्षणोंके लिए मेरे रोंगटे खडे हो गए और लगा कि वहांसे बिना स्नानके किए ही अपने कक्षमें चली जाऊं; परन्तु मैंने थोडा साहस किया; क्योंकि धूल, गर्मी और थकावट तीनोंको दूर करनेका स्नान, एकमात्र उपाय था, तभी मुझे ध्यानमें आया

कि मेरी मां मुझे सदैव कहती थीं कि रात्रिमें स्नान नहीं करना चाहिए और उस दिवस मुझे उसका कारण ज्ञात हो गया। मैंने वस्त्र धारण कर अपने देहके चारों और कवच मांगकर स्नान कर लिया; परन्तु थकावट अधिक होनेके कारण स्नानके पश्चात बिछावनपर धडामसे ढेर हो गई। सूक्ष्म युद्धके कारण उस समय मेरी प्राणशक्ति भी अल्प ही रहती थी; अतः मैं और भी अधिक निढाल हो गई थी। हमारी सह-साधिकाने भी मुझे जगाया नहीं और वह कक्षकी बत्ती जली छोडकर सो गईं। अगले दिवस वह मुझसे कहने लगीं कि कल रात्रि मैंने स्नानगृहमें अनेक लाल-लाल घूरती आंखें देखीं और मुझे अत्यधिक डर लगा; इसलिए रात्रिमें मैं बिना बत्ती बुझाए नामजप करती रही और मुझे अर्ध रात्रितक नींद नहीं आई, भिन्न प्रकारकी दुर्गन्ध आती रही। उस रात्रि सूक्ष्म युद्ध हुआ था और उस कारण ही वह दुर्गन्ध, उन्हें आ रही थी। अगले दिवस हम नामजप कर और कवच लेकर सोए तो सवेरे देखा कि भीत (दीवार) एवं हमारे चादरपर रक्तके छींटे थे। उस साधिकाको आठ दिवस अत्यधिक कष्ट हुआ, कभी उन्हें नींद नहीं आती थी, तो कभी नींदमें भयानक स्वप्न दिखाई देते थे, तो कभी अत्यधिक डर लगता था; किन्तु हमारे पास और कोई उपाय नहीं था; अतः हमें उस भूतहा अतिथिगृहमें दस दिवस रहना ही पडा। मुझे तो सूक्ष्म युद्धके कारण पहलेसे ही कष्ट हो रहे थे, वे मात्र मेरी प्राणशक्तिको और भी न्यून कर देते थे और रात्रिमें सेवासे आनेके पश्चात लगता था कि अगले दिवस मैं सेवाके लिए नहीं उठ पाउंगी; परन्तु गुरुकृपाके कारण मैं प्रातःकाल जब उठती थी तो स्वयंमें स्फूर्ति (ताजगी) अनुभव करती थी।

रक्तके छींटे आना तो हमारे लिए सामान्य सी बात थी;

क्योंकि सनातन संस्थाके साधकोंके साथ तो इस प्रकारकी घटनाएं अनेक बार हो चुकी थीं। उसी समय जब मैं वाराणसी आश्रममें रहती थी तो जिस कक्षमें मैं रहती उस कक्षके भीतोंपर और मेरी चादरोंपर अनिष्ट शक्तियां काले रंगके छींटे डाला करती थीं, यह क्रम जब व्यवस्थापनने मेरा कक्ष परिवर्तित किया तो वहां भी चलता ही रहा !

* कभी-कभी कुछ प्रवचनके आयोजक विशेषकर जो राजस्थानसे होते हैं वे 'हेरिटेज होटल'में हमें अत्यधिक रुचि एवं प्रेमसे रुकवाते हैं; परन्तु ऐसे विश्राम गृहकी आध्यात्मिक स्थिति अत्यधिक भयावह होती है, इस सन्दर्भमें एक अनुभूति साझा कर रही हूं। ख्रिस्ताब्द २०१२ में फेसबुककी मित्र सूचीके माध्यमसे परिचित एक व्यक्तिने जोधपुर नगरमें मेरे प्रवचन करवानेकी इच्छा दर्शाई; परन्तु उनका संयुक्त परिवार था और उनके घरमें एक तो कोई मुझसे परिचित नहीं था और साथ ही घरका वातावरण भी अत्यधिक तनावपूर्ण रहता था; अतः वे चाहकर भी मुझे अपने घरमें रुकवानेमें समर्थ नहीं थे। मैं बडे और वैभवशाली विश्राम गृहमें रुकनेकी अपेक्षा किसी साधकके घर रुकना अधिक उचित समझती हूं, इससे दो लाभ होते हैं, एक तो मुझे विश्राम गृहकी अपेक्षा अल्प प्रमाणमें कष्ट होता है और दूसरा उस घरके सदस्योंको सत्संग मिल जाता है, जिससे उनकी वास्तुकी भी शुद्धि हो जाती है। यद्यपि आज सभीके घरोंमें अत्यधिक अनिष्ट शक्तियोंके कष्ट होनेके कारण प्रथम रात्रि मेरे लिए कष्टप्रद ही रहता है; किन्तु मेरा सोचना है कि यदि मेरे थोडे कष्ट सहन करनेसे उस घरके सदस्योंकी वास्तु थोडे कालके लिए शुद्ध हो जाए तो मुझे वह कष्ट मान्य है। सूक्ष्म जगतके सम्बन्धमें जानकारी और आपके आध्यात्मिक स्तरके अनुरूप ही आपको कष्ट होता है, यह

अध्यात्मशास्त्रका एक सिद्धान्त है । सामान्यतः मेरे श्रीगुरुका मेरे ऊपर कवच देखकर ही अनिष्ट शक्तियां, उनसे गति हेतु मुझे कष्ट देती हैं और मेरे श्रीगुरु इतने दयालु हैं कि मुझे कष्ट देनेवाली शक्तियोंको उनकी वृत्ति अनुरूप या तो उन्हें गति देते हैं या उन्हें दण्डित करते हैं; इसीलिए उन्हें सप्तर्षियोंने भी अवतार कहा है । यातना सह रहे स्थूल और सूक्ष्म जगतके जीवात्माओंको गति देकर उद्धार करना अर्थात कल्याण करना एवं दुष्ट शक्तियोंको दण्ड देना, यह अवतारोंका मुख्य कार्य होता है ।

जोधपुरके आयोजकने मुझे एक पुराने राजप्रासादमें (महलमें), जिसे अब एक 'हेरिटेज होटल'का स्वरूप दे दिया गया था, उसमें रुकवानेका प्रबन्ध किया था । जब वे मुझे लेने रेलयान स्थानक (रेलवे स्टेशन) आए तो उन्होंने अत्यधिक प्रसन्न होकर कहा "मैंने आपके रुकनेकी व्यवस्था एक सुप्रसिद्ध 'हेरिटेज होटल'में (पुरातन धरोहर जिसे विश्राम गृहका प्रारूप दे दिया गया हो) करवाया है ।" वैसे वे स्वयं भी एक उन्नत हैं, आध्यात्मिक दृष्टिसे उनका आध्यात्मिक स्तर ५०% से ऊपर था और वे एक वास्तु विशारद एवं तन्त्रमार्गी साधक भी हैं, तथापि उनकी ओरसे इस प्रकारकी रुकनेकी व्यवस्थाको मैंने ईश्वरेच्छा मान, उनके साथ उस विश्राम गृहमें गई । उन्होंने मेरे लिए अपने भाव अनुरूप एक आरामदायक कक्ष चुना था; परन्तु वह कक्ष आध्यात्मिक दृष्टिसे अत्यधिक कष्टप्रद प्रतीत हुआ, उससे एक विचित्र प्रकारकी सूक्ष्म दुर्गन्ध आ रही थी और उसमें हवा और प्राकृतिक प्रकाश हेतु खिडकी भी नहीं थी तो मैंने अपनी अडचन, उनके एक परिचितके माध्यमसे जो उस समय हमारे साथ थीं, उनसे बताई, उन्होंने विश्राम गृहके व्यवस्थापकको बुलाकर कोई 'अच्छा एवं मेरे

मनोनुकूल कक्ष' दिखाने हेतु कहा । तीन-चार कक्ष देखनेके पश्चात एक कक्ष, जिसमें सभी कक्षोंकी अपेक्षा थोडा अल्प प्रमाणमें कष्ट था, उसके लिए मैंने हामी भरी । रातभरकी यात्रासे मैं थकी हुई थी; अतः प्रसारमें जानेसे पूर्व उनसे थोडी देरके लिए स्नान और विश्रामकी आज्ञा मांगी । मैंने कक्षका निरीक्षण तो कर लिया था; परन्तु जब स्नानगृह, जिसमें शौचालय संयुक्त था, उसे देखा तो माथेपर हाथ रख लिया, वह तो जैसे सम्पूर्ण विश्रामगृहकी सभी अनिष्ट शक्तियोंका मूल गढ था, मैं मन ही मन हंसने लगी, मैंने बुद्धिमानी करनेका प्रयास किया था; इसलिए अनिष्ट शक्तियोंने मुझे उस कक्षकी माया दिखाकर उल्लू बनाया था । मैं उस कक्षमें तीन दिवस रही, वहांका स्नानगृह अत्यधिक सुन्दर और स्वच्छ था; किन्तु वहांसे जो सूक्ष्म दुर्गन्ध आ रही थी, वह सामान्यतः पिशाचोंसे आती है, जितने समय उस कक्षमें रहती थी, उस स्नानगृहमें सनातन संस्थाकी वास्तुशुद्धि उदबत्ती जलाते रहती थी, तब भी वहांकी अनिष्ट शक्तियोंने मुझे तीन बार स्नानगृहमें धक्का देकर गिरानेका प्रयत्न किया और ईश्वरीय कृपासे मैं प्रत्येक बार बच गई, वह स्नानगृह इस प्रकार बना था कि उसमें तीन स्तर थे, प्रथम स्तरपर हस्तप्रक्षालन हेतु बेसिन था, तीन सीढियोंसे नीचे उतरनेपर शौच हेतु कमोड था और पुनः तीन सीढियोंके पश्चात स्नानके लिए 'बाथ-टब' था, बाह्य रूपसे देखनेसे वह स्नानगृह अत्यधिक सुन्दर लगता था; परन्तु आध्यात्मिक दृष्टिसे भयावह था; यदि मैंने उसमें वास्तुशुद्धिकी उदबत्ती सतत नहीं जलाई होती तो मेरी दुर्घटना होनी तो वहां निश्चित ही थी !

* ख्रिस्ताब्द २०१२ में हम नेपाल गए थे, वहां हमारे साथ एक साधिका भी गईं थीं । जनकपुरमें हमें एक दिवसके लिए एक

विश्राम गृहमें रुकना था । विश्राम गृहमें हमने तीन कक्ष परिवर्तित किए तब जाकर एक कक्ष जिसमें सबसे अल्प प्रमाणमें कष्ट था, उसमें अपना सामान रखवाया; परन्तु जब हम उसके स्नानगृहमें गए तो पाया कि उसमें अत्यधिक कष्ट था । हमारे साथ जो साधिका थीं, उन्होंने उपासनाके माध्यमसे साधना आरम्भ ही की थी; अतः मैंने उन्हें सतर्क करते हुए कहा कि आप जब भी स्नानगृह या शौचालयका उपयोग करें तो नामजप अवश्य किया करें; किन्तु उन्होंने मेरी बात उतनी गम्भीरतासे नहीं ली; क्योंकि वे एक श्रमिक यूनियनकी नेत्री हैं व अपने कार्य हेतु अनेक बार विश्राम गृहोंमें रुका करती हैं । वे असतर्क थीं, परिणाम यह हुआ कि अगले दिवस प्रातःकाल उन्हें शौचालयकी दो सीढियोंसे किसीने धक्का दे दिया और वे गिर पडीं, इसकारण उन्हें अगले एक सप्ताह पांव व कमरमें अत्यधिक वेदना रही ।

यह तो मैंने कुछ प्रसंगोंका आपके समक्ष उल्लेख किया है, ऐसी अनेक अनुभूतियां हमें धर्मप्रसारके मध्य हो चुकी हैं । **साधारणतः** होटलके कक्षमें सभी प्रकारके लोग आते हैं और कई प्रकारके कुकर्म भी होते हैं; अतः साधकोंकी साधनाका लाभ लेकर गति पाने हेतु या साधकको कष्ट देने हेतु आस-पासकी अनिष्ट शक्तियां साधकपर आक्रमण करती हैं और उनके लिए नींदमें यह करना और भी सरल होता है ।

जब भी हम किसी होटलमें रुकते हैं तो सोनेसे पहले निम्नलिखित आध्यात्मिक उपाय कर सोना चाहिए –

१. प्रवासके समय अपने ओढने और बिछानेवाली चादर अपने साथ अवश्य रखें ! होटलके बिछावनपर न सोएं, चाहे वह कितना भी मूल्यवान, नूतन या स्वच्छ क्यों न हो ।

२. निर्धारित स्थलपर पहुंचते ही, अपने इष्टका या गुरुका चित्र

होटलके कक्षमें लगा दें । इससे वहांके वास्तुकी शुद्धि होने लगेगी और वास्तु कुछ सीमातक पवित्र हो जाएगा ।

३. सबसे महत्त्वपूर्ण है कि सोनेसे पूर्व बिछावनपर बैठकर १५ मिनट अपने गुरुमन्त्रका या इष्टदेवताके मन्त्रका जपकर सोएं और प्रार्थना इस प्रकार करें, "हे भगवन ! अभी १५ मिनिट जो मैं जप करने जा रही हूं या जा रहा हूं, उस जपसे आज सम्पूर्ण रात्रि मेरा अनिष्ट शक्तियोंसे रक्षण हो और मैं प्रातः निर्धारित समयपर उठ पाऊं और सम्पूर्ण रात्रि मेरे चारों ओर आपके अस्त्र एवं शस्त्रसे कवच-निर्माण हो, ऐसी आप कृपा करें !" ध्यानमें रखें कि लेटकर इस कवच हेतु जप न करें, क्योंकि यह जप पूर्ण करनेसे पहले ही अनिष्ट शक्तियां हमें सुला देती हैं, जिससे उनके आक्रमणका कार्य रात्रिमें सरलतासे होता रहे और वे हमें सम्पूर्ण रात्रि कष्ट देती रहें ।

४. अपने बिछावनके चारों ओर देवताओंके सात्त्विक नामजपकी पट्टियां लगा सकते हैं, इसे भी अपने साथ लेकर यात्रा करें ! (यह हमारे पास उपलब्ध हैं)

५. रात्रिमें अपने लैपटॉपपर या सीडी प्लेयरपर, सात्त्विक नामजपकी सीडी 'रिपीट' मोडपर लगाकर सो सकते हैं । (नामजपकी ध्वनिचक्रिका अर्थात CD हमारे पास उपलब्ध हैं)

६. किसी यज्ञकी विभूति या मन्दिरसे प्राप्त विभूति भी साथ लेकर चलें । हथेलीपर चुटकीभर विभूति रखकर अपने बिछावनके चारों ओर सोनेसे पूर्व फूंककर सोएं ! ऐसा करनेसे बिछावनके चारों ओरका काला आवरण नष्ट हो जाता है ।

७. विभूतिका टीका लगाकर भी सो सकते हैं ।

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसङ्ग

स्वर्ग एवं नरक आपके हाथमें

एक वृद्ध महिलाकी मृत्यु हो गई, यमराज उसे लेने आए।

महिलाने यमराजसे पूछा, "आप मुझे स्वर्ग ले जाएंगे या नरक ?"

यमराज बोले, "दोनोंमें से कहीं नहीं। तुमने इस जन्ममें बहुत ही अच्छे कर्म किए हैं; इसलिये मैं तुम्हें सीधे प्रभुके धाम ले जा रहा हूं।"

वृद्ध महिला प्रसन्न हो गई और बोली, "धन्यवाद, परन्तु मेरी आपसे एक विनती है। मैंने यहां धरतीपर स्वर्ग-नरकके बारेमें बहुत सुना है; अतः मैं एक बार इन दोनों स्थानोंको देखना चाहती हूं।"

यमराज बोले, "तुम्हारे कर्म अच्छे हैं; इसलिए मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी करता हूं। चलो, हम स्वर्ग और नरकके मार्गसे होते हुए प्रभुके धाम चलेगें।" और दोनों चल पडे।

सबसे पहले नरक आया। नरकमें वृद्ध महिलाने फूट-फूटकर लोगोंके रोनेका स्वर सुना। नरकमें सभी लोग दुबले-पतले और अस्वस्थ दिखाई दे रहे थे।

महिलाने एक व्यक्तिसे पूछा, "यहां आप सब लोगोंकी ऐसी दशा क्यों है ?"

व्यक्ति बोला, "तो और कैसी दशा होगी ? मरनेके पश्चात जबसे यहां आए हैं, हमने एक दिवस भी भोजन नहीं किया। भूखसे हम अत्यधिक व्याकुल हैं।" कुछ क्षण पश्चात

वृद्ध महिलाकी दृष्टि एक विशाल पात्रपर पडी, जो लोगोंके आकारसे अनेक गुना बडा था और उस पात्रके ऊपर

एक विशाल 'चम्मच' लटका हुआ था । उस पात्रसे बहुत ही अच्छी सुगन्ध आ रही थी ।

वृद्ध महिलाने उस व्यक्तिसे पूछा, "इस पात्रमें क्या है ?"

व्यक्ति निराश होकर बोला, "ये पात्र बहुत ही स्वादिष्ट खीरसे सदैव भरा रहता है ।"

वृद्ध महिलाने आश्चर्यसे पूछा, "इसमें खीर है ? तो आप लोग पेट भरके ये खीर खाते क्यों नहीं, भूखसे क्यों तडप रहे हैं ?"

व्यक्ति रो-रोकर बोलने लगा, "कैसे खाएं ? ये पात्र अत्यन्त ऊंचा है, हममेंसे कोई भी उसतक नहीं पहुंच पाता ।"

वृद्ध महिलाको उनपर दया आ गई और सोचने लगी, अभागे ! खीरका पात्र होते हुए भी भूखसे पीडित हैं ! सम्भवतः ईश्वरने इन्हें ये ही दण्ड दिया होगा ।

यमराज वृद्ध महिलासे बोले, "चलो ! हमें विलम्ब हो रहा है ।" वे दोनों चल पडे ।

कुछ दूर चलनेपर स्वर्ग आया । वहांपर वृद्ध महिलाको सबका हंसने, खिलखिलानेका स्वर सुनाई दिया ।

सब लोग बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे । उनको प्रसन्न देखकर वृद्ध महिला भी बहुत प्रसन्न हो गई; परन्तु वहां स्वर्गमें भी वृद्ध महिलाकी दृष्टि वैसे हीविशाल पात्रपर पडी, जैसा नरकमें था, उसके ऊपर भी वैसा ही 'चम्मच' लटका हुआ था ।

वृद्ध महिलाने वहां लोगोसे पूछा, "इस पात्रमें क्या है ?"

स्वर्गके लोग बोले, "इसमें बहुत स्वादिष्ट खीर है ।"

वृद्ध महिला अचम्भित हो गई ! उनसे बोली, "परन्तु ये तो अत्यन्त विशाल है । आप लोग तो इसतक पहुंच ही नहीं पाते होंगे । आप लोगोंको भोजन मिलता ही नहीं होगा, आप लोग भूखसे व्याकुल होगें; परन्तु मुझे तो आप सभी इतने

प्रसन्न लग रहे हो, ऐसा कैसे ?"

लोग बोले, "हम तो इस पात्रसे पेट भरकर खीर खाते हैं।"

महिला बोली, "परन्तु कैसे ?"

लोग बोले, "क्या हो गया यदि पात्र विशाल है तो। यहांपर कितने सारे पेड हैं, ईश्वरने ये पेड पौधे, नदी, झरने हम मनुष्योंके उपयोगके लिए ही तो बनाए हैं। हमने इन पेडोंकी लकडी ली, उसको काटा और लकडियोंके खण्डोंको जोडकर विशाल सीढीका निर्माण किया। उस लकडीकी सीढीकी सहायतासे हम इस पात्रतक पहुंचते हैं और सब मिलकर खीरका आनन्द लेते हैं।"

वृद्ध महिला यमराजकी ओर देखने लगी ! यमराज मुसकाए बोले, "ईश्वरने स्वर्ग और नरक मनुष्योंके हाथोंमें ही सौंप रखा है, चाहें तो अपने लिए नरक बना लें, चाहें तो अपने लिए स्वर्ग बना लें ! ईश्वरने सबको एक समान स्थितिमें डाला है। उसके लिए उसके सभी बच्चे एक समान हैं, वो किसीसे भेदभाव नहीं करते। वहां नरकमें भी पेड-पौधे आदि थे; परन्तु वे लोग स्वयं ही आलसी हैं, उन्हें खीर हाथमें चाहिए, वे कोई कर्म नहीं करना चाहते, कोई परिश्रम नहीं करना चाहते, इसलिए सब भूखसे पीडित हैं।"

यही तो ईश्वरकी बनाए इस लोकका नियम है। जो कर्म करेगा, परिश्रम करेगा, उसीको मीठा फल खानेको मिलेगा।

अर्थात स्वर्ग एवं नरक आपके हाथमें ही हैं, पुरुषार्थ करें, अच्छे कर्म करें और अपने जीवनको स्वर्ग बनाएं !

अजवाइन (भाग-३)

अर्शको ठीक करे : पाचन सम्बन्धी समस्याओंको दूर करनेके लिए अजवाइनका उपयोग किया जा सकता है। विशेष रूपसे अजवाइन अर्शकी (कब्जकी) समस्याका प्रभावी उपचार कर सकती है । अजवाइनके औषधीय गुण पेटमें होनेवाले असन्तुलनको ठीककर मल त्यागको सरल बनानेमे सहायक होता है। यदि आप अर्शके रोगी हैं तो अजवाइनके गुणोंसे लाभ प्राप्त कर सकते हैं|

मधुमेहमें : प्रतिदिन प्रातः उठनेपर अजवाइनका पानी पीनेसे मधुमेहकी समस्या दूर होती है । प्रातः उठकर अजवाइनके पानीका सेवन करनेसे मधुमेहकी समस्या दूर होती है।

अपच, अतिसार (दस्त) और वायु विकारमें : १०० ग्राम पीसी हुई अजवाइनमें १५ ग्राम पिसा हुआ सेन्धा लवण (नमक) मिलाकर चूर्ण बनाएं ! इसका आधा चम्मच, दो बार भोजनके पश्चात पानीमें मिलाकर पी लें ! इस प्रकार अपच, 'दस्त' और वायुदोषमें अजवाइनके सेवनसे लाभ होगा।

महिलाओंके लिए : अजवाइनका उपयोग महिला स्वास्थ्यको बढावा देनेमें भी सहायता करता है। महिलाओंके लिए मासिक धर्मकी समस्याएं बहुत ही कष्टदायक होती है; परन्तु अजवाइनके औषधीय गुण महिलाओंको मासिक धर्मके समय होनेवाली समस्याओंसे बचा सकते हैं। अजवाइनके बीज एक तन्त्रिका औषधिके रूपमें कार्य करते हैं । इस प्रकार यह महिलाओंको होनेवाली मासिक ऐंठनसे छुटकारा दिला सकता है।

जम्मू-कश्मीरमें आतङ्कवादी प्रकरणोंमें ६३.९३% की न्यूनता, 'पत्थरबाज' और आतङ्की बननेके चलनमें भी भारी गिरावट

जम्मू-कश्मीरसे 'अनुच्छेद ३७०'को समाप्त करने और केन्द्र शासित प्रदेश बनाए जानेके पश्चातसे राज्य विकासके मार्गपर चल पडा है । साथ ही आतङ्की प्रकरणों और 'पत्थरबाजी'में भी न्यूनता आई है । जम्मू-कश्मीरमें गत वर्ष आतङ्की प्रकरणोंमें ६३.९३ प्रतिशतकी न्यूनता आई है । केन्द्रीय गृह मन्त्रालयने सोमवार, ११ जनवरीको यह जानकारी दी|

इसी अवधिके अन्तराल सुरक्षा बलोंके चोटिल होनेकी प्रकरणोंमें २९.११ प्रतिशत और नागरिकोंकी हताहतोंकी संख्यामें १४.२८ प्रतिशतकी न्यूनता आई है।

राज्यमें 'आर्टिकल ३७०' हटनेके पश्चातसे कश्मीरी युवकोंके आतङ्की सङ्गठनसे जुडनेका प्रतिशत बहुत गिरा है । जानकारीके अनुसार, मोदी शासनद्वारा जम्मू-कश्मीरसे अनुच्छेद ३७० के समाप्त किए जानेके पश्चात मुख्य रूपसे गत वर्षमे कश्मीरी युवाओंके आतङ्कवादी समूहोंमें सहयोगी होनेमें ४० प्रतिशतसे अधिककी कमी आई है । आतङ्कवादी समूहोंमें सम्मिलित होनेवाले युवाओंकी संख्या एक वर्ष पूर्व १०५ थी । इस वर्ष १ जनवरी और १५ जुलाईके मध्य ६७ तक गिर गई, जबकि इस अवधिके अन्तराल आतङ्की प्रकरण भी १८८ से घटकर १२० हुई हैं।

यह बहुत ही प्रसन्नताकी बात है कि जम्मू-कश्मीरमें

आतङ्क घट रहा है तथा वहांके युवा भी आतङ्कवादी समूहमें सम्मिलित नहीं हो रहे हैं । जैसे ही पृथकतावादियोंका वर्चस्व न्यून हुआ, आतङ्क स्वत: न्यून हो गया।

****

ब्राह्मणोंको अपशब्द कहनेवाली कथित कार्यकर्ता मीनाने सचिन तेंदुलकरके जनेऊ धारण करनेपर उगला विष

मीना कन्दस्वामी नामक तथाकथित कार्यकर्ताने ब्राह्मणोंके लिए अभद्र टिप्पणी की है। उसने क्रिकेट खिलाडी सचिन तेंदुलकरके चित्रमें, उसे जनेऊ धारण किए हुए देखा तो भडक गई। गणेश चतुर्थीके अवसरपर सचिन तेंदुलकरने पूजा करते हुए, जनेऊ पहनकर चित्र खिंचवाया था और उस चित्रको 'इंस्टाग्राम'पर साझा किया था। सचिनद्वारा इस प्रकार जनेऊ पहननेपर मीनाने घृणित टिप्पणी करते हुए, जनेऊको किसी अन्तर्वस्त्रके समान घृणास्पद उपमा दी।

ब्राह्मण विरोधी मीना अपने-आपको सबसे नीचेकी श्रेणीका बताती है। इससे पूर्व भी वह ऐसी विरोधी चर्चाओंके लिए विख्यात रही है, जिसमें उसपर अपने पतिसे सम्बन्ध विच्छेदके पश्चात, धन प्राप्त करनेके कारण प्रकरण रहे हैं। वह अपने पतिपर प्रताडित करनेके आरोप लगाती रही है, जिसको उसके पति डॉ. धर्मराजने अस्वीकृत किया था। डॉ. धर्मराजने मीनाके पितापर आक्रमण करनेका आरोप भी लगाया था, जिसके कारण मीडिया समूहने मीनाके पक्षमें कूदकर, उसे बचाते हुए, उसके पतिको ही दोषी घोषित करा दिया था।

धर्मविरोधी कार्यकर्ता जब स्वयं ही सनातन धर्मका अपमान करने लगते हैं, तो वे किसी प्रकार भी हिन्दू नहीं हो

सकते । ऐसे तथाकथित कार्यकर्ताओंको दण्डित किया जाना चाहिए; अन्यथा उन्हें देखकर अन्य भी अभद्रता ही करने लगेंगे । (११.०१.२०२१)

****

शिवलिंगकी पूजा करनेवाले निर्लज्ज, होलिकाको बलात्कारके पश्चात जलाया, आरजेडी विधायकका 'वीडियो' प्रसारित

'वीडियो'में विधायक लोगोंसे पूछ रहे हैं कि होलिका कौन थी ? इसके पश्चात स्वयं ही इस प्रश्नका उत्तर देते हुए बोल रहे हैं कि होलिका घरकी ही बेटी थी, जिसके साथ मुट्ठीभर लोगोंने बलात्कार करके जला दिया ।

राष्ट्रीय जनता दलके एक विधायकका 'वीडियो' 'सोशल मीडिया'पर प्रसारित हो रहा है । इस 'वीडियो'में विधायकको देवी-देवताओंपर अमर्यादित टिप्पणी करते हुए देखा जा सकता है । 'वीडियो' जहानाबादके मखदुमपुर विधानसभा क्षेत्रसे राजद विधायक सतीश कुमार दासका बताया जा रहा है । वे भगवान शिव और मां दुर्गाको लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी करते दिख रहे हैं ।

जब राजनीतिसे धर्मको निकाल दिया जाए, तब वह असुरोंका राज होता है और कोई असुर ही धर्मविरुद्ध बात बोल सकता है । आजके चुने हुए जनप्रतिनिधि देशमें चल रही मैकॉले शिक्षा पद्धतिकी देन है, जिन्हें न ही धर्मका ज्ञान है और न ही भारतीय संस्कृतिकी समझ है और न ही इन्हें विधिके प्रावधानोंका कोई भय है, तभी ये लोग भारतीय संस्कृति और इस देशके बहुसंख्यक लोगोंका सार्वजनिक मंचोंसे अपमान करते हैं । भारतके न्यायालयोंका भी इस

प्रकारके विवादोंपर प्रदर्शन बहुत निराशाजनक रहा है । हिन्दुओ, अपना आत्मबल बढाकर शीघ्रातिशीघ्र हिन्दूराष्ट्रकी स्थापना हो, ऐसा प्रयास करें, जिसमें विधिवत धार्मिक शिक्षाका प्रावधान होगा और ऐसे अराजक तत्त्वोंका वहां कोई भी स्थान नहीं होगा । (१२.०१.२०२१)

****

ब्राह्मणोंको अपशब्द कहनेवाली कथित कार्यकर्ता मीनाने सचिन तेंदुलकरके जनेऊ धारण करनेपर उगला विष

मीना कन्दस्वामी नामक तथाकथित कार्यकर्ताने ब्राह्मणोंके लिए अभद्र टिप्पणी की है । उसने क्रिकेट खिलाडी सचिन तेंदुलकरके चित्रमें, उसे जनेऊ धारण किए हुए देखा तो भडक गई । गणेश चतुर्थीके अवसरपर सचिन तेंदुलकरने पूजा करते हुए, जनेऊ पहनकर चित्र खिंचवाया था और उस चित्रको 'इंस्टाग्राम'पर साझा किया था । सचिनद्वारा इस प्रकार जनेऊ पहननेपर मीनाने घृणित टिप्पणी करते हुए, जनेऊको किसी अन्तर्वस्त्रके समान घृणास्पद उपमा दी ।

ब्राह्मण विरोधी मीना अपने-आपको सबसे नीचेकी श्रेणीका बताती है । इससे पूर्व भी वह ऐसी विरोधी चर्चाओंके लिए विख्यात रही है, जिसमें उसपर अपने पतिसे सम्बन्ध विच्छेदके पश्चात, धन प्राप्त करनेके कारण प्रकरण रहे हैं । वह अपने पतिपर प्रताडित करनेके आरोप लगाती रही है, जिसको उसके पति डॉ. धर्मराजने अस्वीकृत किया था । डॉ. धर्मराजने मीनाके पितापर आक्रमण करनेका आरोप भी लगाया था, जिसके कारण मीडिया समूहने मीनाके पक्षमें कूदकर, उसे बचाते हुए, उसके पतिको ही दोषी घोषित करा दिया था ।

धर्मविरोधी कार्यकर्ता जब स्वयं ही सनातन धर्मका

अपमान करने लगते हैं, तो वे किसी प्रकार भी हिन्दू नहीं हो सकते । ऐसे तथाकथित कार्यकर्ताओंको दण्डित किया जाना चाहिए; अन्यथा उन्हें देखकर अन्य भी अभद्रता ही करने लगेंगे । (११.०१.२०२१)

****

बांग्लादेशमें जिहादियोंद्वारा १७ वर्षीय हिन्दू लडकीका सामूहिक बलात्कार व हत्या

बांग्लादेशकी कलाबगन पुलिसने ढाकामें १७ वर्षीय लडकीका सामूहिक बलात्कार और भीषण हत्याके आरोपमें जिहादी फरदीन इफ्तेखार और ३ अन्य आरोपियोंको पकडा है । १९ वर्षीय लडकी कलाबगन क्षेत्रके अच्छे विद्यालयमें छात्रा थी । 'न्यूज २४'की सूचना अनुसार, विगत २ माहसे जिहादी फरदीनके पीडितासे सम्बन्ध थे ।

गुरुवार, ७ जनवरीकी रात्रि जिहादी फरदीनने अपने परिवारके सदस्योंकी अनुपस्थितिमें लडकीको अपने घरले जाकर अपने मित्रोंके साथ मिलकर निर्दयतासे सामूहिक बलात्कार किया और लडकीकी हत्या कर दी । पीडिताका मृत शरीर 'पोस्टमार्टम'के लिए भेज दिया है ।

पीडिताकी मांने कहा, “बच्चे 'रिलेशनशिप'में आनेपर मरते नहीं हैं । यदि उसका यौन उत्पीडन नहीं किया गया था, तो उसका इतना अधिक रक्त क्यों बहा ? जिससे मेरी बेटी अनुष्काका चेहरा पीला पड गया था । वह किसी 'रिलेशनशिप'में नहीं थी ।”

'जमुना टीवी'ने बताया कि उसके पेटपर चोटके चिह्न थे । पीडिताके पिताद्वारा परिवाद (शिकायत) प्रविष्टके पश्चात पुलिसने जिहादी फरदीन एवं तीन अन्य आरोपियोंको

पकडकर शुक्रवार, ८ जनवरीको ढाकाके मुख्य 'मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट' न्यायालयमें प्रस्तुत किया, जहां उसने अपना अपराध स्वीकार करते हुए वक्तव्य दिया । 'जिला मजिस्ट्रेट' न्यायाधीश मामूनुर रशीदने वक्तव्य लिखनेके पश्चात आरोपियोंको कारावास भेज दिया ।

जिहादी आतङ्की ही होता है; अतः वह निर्दय भी होता ही है और बांग्लादेश सदृश आतङ्कियोंके देशमें हिन्दू माता-पिताने अपनी बेटियोंको बन्दूक देकर बाहर भेजना चाहिए । इस समस्याका पूर्ण समाधान इन आतङ्कियोंके, इनके पोषक मस्जिदों, मदरसों, मौलवियों व इनके पोषित राष्ट्रोंके अन्तके पश्चात ही होगा ।

****

'आप' विधायकने योगी आदित्यनाथके विरुद्ध बोले अपशब्द, मारनेकी भी मिली धमकी

उत्तर प्रदेशके योगी शासनपर प्रश्न उठानेके लिए रायबरेली पहुंचे आम आदमी दलके विधायक सोमनाथ भारतीके मुंहपर मसि (स्याही) फेंक दी । अपने आधिकारिक 'ट्विटर हैंडल'से दलने इसकी जानकारी दी । रविवारको रायबरेली पहुंचनेसे पूर्व विधायक सोमनाथ शनिवार अमेठी पहुंचे थे । इसी मध्य योगी शासनपर वचनोंसे प्रहार करते हुए उन्होंने विवादित वक्तव्य दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि हम उत्तर प्रदेशमें आए हैं । हम यहांके विद्यालयको देख रहे हैं । हम यहांके चिकित्सालयोंको देख रहे हैं; ऐसी दयनीय स्थितिमें है कि चिकित्सालयोंमें बच्चे तो जन्म ले रहे हैं; परन्तु कुत्तोंके बच्चे जन्म ले रहे हैं । इसीके पश्चात अनेक स्थानोंपर उनका विरोध आरम्भ हो गया तथा अनेक व्यक्तियोंने उनपर अपना

क्रोध व्यक्त करना आरम्भ कर दिया, जिसके पश्चात 'कालिख' फेंकनेका प्रकरण हुआ। इस प्रकरणका एक चित्रपट भी साझा हो रहा है, जिसमें सोमनाथ भारती पुलिसकर्मीसे कहते दिख रहे हैं कि यह सब करनेसे कुछ नहीं होगा अतुल, योगीकी मौत सुनिश्चित है। उसको बन्दी बनाइए। सोमनाथ भारतीने पुलिससे असभ्य भाषाका प्रयोग भी किया।

वहीं एक अन्य समाचारके अनुसार, योगी आदित्यनाथजीकी पुनः हत्या कर देने की धमकी भी दी गई है, जिसमें आरोपीने ११२ पर चलभाषकर मुख्यमन्त्रीको 'एके-४७'से मार देनेकी धमकी दी है। इसके पश्चात पुलिस विभाग भी सतर्क हो गया तथा अज्ञात आरोपीके विरुद्ध प्राथमिकी प्रविष्टि की गई है तथा जांच भी जारी है।

'आप' जैसे नाटक करनेवाले दल स्वयं देहली सम्भाल नहीं पाते हैं और कुछ वर्षोंसे देहलीसे कई गुणा बडे उत्तर प्रदेशको अच्छेसे सम्भालनेवाले योगीजीपर अंगुली उठाते हैं, तो यह उनकी मूढता ही है और ये अब मुख्यमन्त्रीकी मृत्युकी भी बात कर रहे हैं, यह दण्डनीय है। योगी शासन इस विषयमें कार्यवाही करे और साथ ही केन्द्र योगीजीकी सुरक्षा सुनिश्चित करे!

****

पंजाबके ४.७४ लाख अपात्र किसानोंने प्राप्त की 'पीएम' किसान निधि, 'आरटीआई'से हुआ उजागर, अब लौटाना होगा

'प्रधानमन्त्री किसान सम्मान निधि योजना'के अन्तर्गत केन्द्र शासनने निर्धन किसानों हेतु धनराशि देनेकी योजना बनाई थी। इसमें कुछ राज्योंमें हुए घोटाले ज्ञात हुए हैं। इनमें

२०.४८ लाख अपात्र किसानोंके खातोंमें १३६४ कोटि धन स्थानान्तरित किया गया । केन्द्रीय कृषि मन्त्रालयने एक 'आरटीआई'के उत्तरमें यह उजागर किया है। अपात्र लाभार्थी किसानोंकी सङ्ख्या पंजाबमें सर्वाधिक है।

उल्लेखनीय है कि 'पीएम' किसान योजनाके अन्तर्गत निर्धन किसानोंको ६००० रुपयेकी राशि २००० रुपयेके ३ भागोंमें दी जाती है। मोदीजीने यह योजना २०१९ से उन किसानोंके लिए प्रारम्भ की, जिनके पास २ 'हेक्टेयर'से न्यून भूमि है। अभी-अभी २५ दिसम्बरको इस योजनाके अन्तर्गत अनेक अपात्र किसानोंको यह राशि दे दी गई । अब मन्त्रालयद्वारा अपात्र किसानोंसे दी गई धनराशि लौटानेकी प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है । 'आरटीआई' आवेदक वेंकटेश नायरको शासनद्वारा दी गई जानकारीके अनुसार, ५५.५८ प्रतिशत किसान ऐसे हैं, जो आयकर दाता हैं, तो ४४.४१ ऐसे जो योजनाकी अर्हता पूर्ण नहीं करते । पंजाब, असम, महाराष्ट्र, गुजरात तथा उत्तर प्रदेशमें सर्वाधिक अपात्र लाभार्थी पाए गए हैं, जिनमें २३.१६% अर्थात ४.७४ लाख मात्र पंजाबमें हैं । पंजाब, असम तथा गुजरातमें सर्वाधिक ५४% अयोग्य लाभार्थी पाए गए हैं।

केन्द्र शासनद्वारा अपात्र किसानोंद्वारा छलसे प्राप्त की गई धनराशि पुनः लेनेकी प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है।

यह एक कटु सत्य है। शासन एक ओर किसानों हेतु एकके पश्चात एक योजनाएं ला रहा है और कथित किसान उसका केवल दुरुपयोग ही करते हैं, जिसपर रोक लगाई जानी चाहिए। किसानोंका हित अवश्य होना चाहिए; परन्तु लूट व चोरीका दण्ड भी कठोर होना चाहिए और शासन

इस विषयमें संज्ञान ले ! ऐसी व्यवस्थागत विसंगतियोंको दूर करनेके लिए हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना आवश्यक है। (१२.०१.२०२१)

****

लन्दनमें 'अल्लाह-हू-अकबर'के लगाए 'नारे' और ३ की चाकू घोंपकर कर दी हत्या

लन्दनके 'रीडिंग पार्क'में तीन लोगोंकी हत्या करनेवाले युवकको सोमवार, ११ जनवरीको आजीवन कारावासका दण्ड सुनाया गया है। २६ वर्षके खैरी सादुल्लाहने पिछले वर्ष २० जूनको फोर्बरी 'गार्डन'में ३६ बर्षके डेविड फर्लांग, ४९ वर्षीय डेविड वेल्स और ३९ वर्षीय जो रिची बेनेटकी चाकू मारकर हत्या कर दी थी।

जानकारीके अनुसार, उसने 'अल्लाह-हू-अकबर' चिल्लाते हुए तीनोंकी चाकू मारकर हत्या कर दी। बताया जा रहा है कि उसने 'जिहाद'के लिए यह नृशंस कृत्य किया है। न्यायमूर्ति स्वीनीने कहा कि उसके सभी अपराधोंका आतङ्कवादी सम्बन्ध था।

खैरी सादुल्लाहने ६० सैकेण्डके भीतर चाकूसे लोगोंको मार डाला था। इसके अतिरिक्त स्टीफन यंग, पैट्रिक एडवर्ड्स और निशित निसुदन सहित तीन अन्य लोग चोटिल भी हो गए। कुछ ही समय पश्चात उसे पकड लिया गया था।

अभियोजन पक्षने कहा कि सादुल्लाहको चरमपन्थमें लम्बे समयसे रुचि थी। २०१९ में उसके चलभाषपर मोहम्मद इमाजीके विषयमें कुछ सामग्री आई थी। 'आईएसआईएस प्रोपेगेंडाबाज'को 'वीडियो'में पीडितोंको मारनेसे पहले उपहास उडाते हुए देखा गया। उसपर २०१७ में कारावासका दण्ड

काटते हुए एक चरमपन्थी इस्लाम प्रचारकके साथ जुडे होनेका आरोप लगा था।

सादुल्लाह लीबियासे है और वहांकी अशान्तिसे भागकर ब्रिटेन आया था। अभियोजन पक्षने कहा कि वह एक आतङ्कवादी था, जिसे तबतक जेलमें रखा जाना चाहिए, जबतक वह मर नहीं जाता है। उसने इस घटनाको तब किया था, जब पहली बार 'लॉकडाउन'में मिली छूटके पश्चात तीन मित्र सांयकालमें 'पार्क'में बैठे थे।

समस्त विश्वमें ये धर्मान्ध लोग अपनी मानसिकता सिद्ध कर चुके हैं कि इनको जिहादके अतिरिक्त कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता। क्या यह मानवताकी हत्या नहीं है ? जो किसी निरपराध व्यक्तिकी हत्या कर दे, कुछ दिन पूर्व ही फ्रांसमें एक शिक्षकको गला काटकर मार दिया गया था और जिहादी 'नारे' लगाए थे; अतः सभी लोगोंको यह ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे धर्मान्ध जहां भी हों, उनसे सावधान रहें और सभी देश ऐसे आतङ्कियोंको अपने देशोंसे बाहर करें, इसीमें मानवताका हित है।

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं

तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं। इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र, १५ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नामजप कब, कहां और कितना करें ? १९ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. योगनिद्रा २५ जनवरी रात्रि ७.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३

(9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है । इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915